

आयोजक :



FORUM FOR INTEGRATED NATIONAL SECURITY

कार्यक्रम

सरहद को प्रणाम

19 - 23 नवंबर 2012



सरहद को प्रणाम

Sarhad Ko Pranam

सरहद को प्रणाम



हमारे पड़ोसी देश



प्रस्तावना



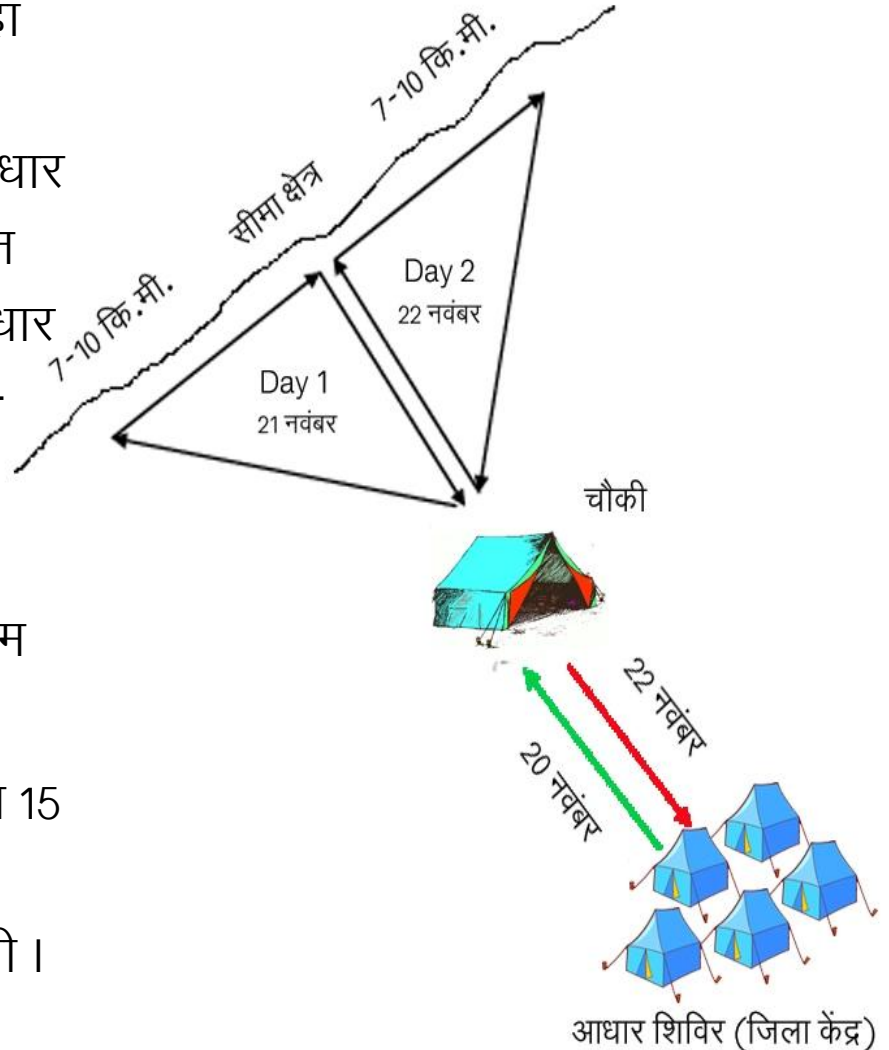
हर नई पीढ़ी, अपना भारत देश जिस भूभाग से बना है उसकी सीमाओं को देखे व समझे। सरहद पर निवास करने वाले जन से वह परिचित हो। वहाँ के पर्यावरण व परिवेश को जाने। सीमा प्रहरियों के मर्म से एकात्म हो। स्वयं का ज्ञान बढ़ाने हेतु सीमा से संवाद करे। **‘देश रक्षा धर्म हमारा, देश सेवा कर्म हमारा’** यह जयघोष उसका जीवन मंत्र बने। देश के एक अच्छे नागरिक होने के दायित्वों का वह सफलतापूर्वक निर्वहन करे। **‘सरहद को प्रणाम’** कार्यक्रम का यह उद्देश्य है।



कार्यक्रम में प्रयुक्त शब्दावलियों के अर्थ-1



1. **आधार शिविर** – जिले का वह केंद्र जहाँ निर्धारित टोलियाँ पहले एकत्र होंगी। आवश्यक सूचना व प्रशिक्षण के बाद आधार शिविर से टोलियाँ चौकी के लिए प्रस्थान करेंगी। यात्रा पूर्ण कर सभी टोलियाँ आधार शिविर पर वापस एकत्रित होकर अपने-अपने गृह स्थान के लिए प्रस्थान करेंगी।
2. **चौकी** – सीमा से नजदीक का वह केंद्र जहाँ एक अथवा दो टोलियाँ रात्रि विश्राम करेंगी।
3. **सीमा क्षेत्र** – सीमा के समानांतर औसत 15 से 20 कि.मी. का वह हिस्सा जिसे एक टोली 2 दिन में पैदल चलकर पूरा करेगी।



कार्यक्रम में प्रयुक्त शब्दावलियों के अर्थ-2



सीमा से संवाद

4. सीमा क्षेत्र को समझना। वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों, जैसे दुर्गमता, विकटता, जल, जंगल, रेगिस्तान, बर्फ, नदी व पहाड़ियों को अनुभव करना। जैव विविधता, पशु, पक्षी, जलचर इत्यादि क्षेत्र में विचरण करनेवाली विभिन्न प्रजातियों को समझना। कम बोलना, ज्यादा सुनना व समझना। सीमा क्षेत्र के निवासियों से चर्चा करना। वहाँ के जन को उपलब्ध स्वास्थ्य, शिक्षा व रोजगार जैसे विषयों को जानना। सड़क, बिजली, पानी जैसी मौलिक सुविधाओं की स्थिति का अध्ययन करना। सीमा सुरक्षा में लगे सैनिकों का सम्मान करते हुए उनके अनुभवों को जानना। सुरक्षा संबंधी खतरों की अनुभूति करना। व्यवस्था की कमियों और अच्छाइयों को देखना व समझना। इस प्रकार के सर्जनात्मक कार्यों को करते हुए सीमा के भौगोलिक व सामाजिक मर्म को अनुभव करने का कार्य है — 'सीमा से संवाद'।



कार्यक्रम में प्रयुक्त शब्दावलियों के अर्थ-3



5. सीमा तीन श्रेणियों की रहेगी :

- **कठिन** — जहाँ चलने के लिए अच्छा स्वास्थ्य एवं अपने विभाग व आधार शिविर में दिया गया प्रशिक्षण अनिवार्य है।
- **दुर्गम** — पूर्ण स्वस्थ व कठोर जीवन के अभ्यासी इन क्षेत्रों में परिश्रमपूर्वक यात्रा कर सकते हैं।
- **अति दुर्गम** — जहाँ अत्यंत कठोर सैन्य प्रशिक्षण व साधनों के बगैर पहुँचना संभव नहीं। अतः उसके निकटतम बिंदु तक जाने का प्रयास होगा।

6. **तीर्थ** — प्रस्थान से पूर्व सीमा पर अभिषेक के लिए अपने ग्राम अथवा नगर से संगृहीत कर साथ लाया गया जल (नदी, तालाब, कुओं इत्यादि का पवित्र जल)।

7. **सरहद की माटी** — सीमा क्षेत्र से संगृहीत कर लाई गई मिट्टी जिसका प्रतिभागी अपने गृह क्षेत्र में अनुभव कथन के कार्यक्रमों में समाज दर्शन, पूजन व तिलक हेतु प्रयोग कर सकेंगे।

कार्यक्रम के 4 चरण



1. चयन व प्रशिक्षण
2. आरक्षण व यात्रा
3. सीमा से संवाद
4. सरहद का संदेश



चरण — 1



चयन व प्रशिक्षण

- प्रतिभागियों का चयन सभी जिलों से हो तो अच्छा रहेगा।
- एक जिले से अधिकतम $9 + 1$ (टोली प्रमुख) = 10 प्रतिभागियों का चयन करें।
- प्रतिभागियों का चयन विभाग करेगा।
- प्रशिक्षण के दो भाग हैं:
 1. **विभाग स्तर पर प्रशिक्षण** — प्रतिभागियों को घर से चलने से पूर्व सभी प्रकार के (शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक) प्रशिक्षण यहाँ दिये जाएँगे। प्रशिक्षण हेतु पाठ्यक्रम दिल्ली से प्राप्त होगा, उसमें आवश्यक स्थानीय विषय व जानकारी जोड़ी जा सकती है।
 2. **आधार शिविर पर प्रशिक्षण** — इस प्रशिक्षण से चौकी व सीमा क्षेत्र में यात्रा के लिये आवश्यक सभी प्रकार की करणीय व अकरणीय कार्यक्रमों की जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण की अनिवार्य आधारभूत बातें दिल्ली कार्यालय से प्राप्त होंगी। उसमें आधार शिविर के कार्यकर्ता स्थानीय आवश्यक बातों का समावेश कर सकेंगे।

चरण – 2



आरक्षण व यात्रा

- आधार शिविर की जानकारी प्रांत, विभाग या जिले को प्राप्त होते ही आने-जाने का रेल आरक्षण शीघ्रातिशीघ्र करवाना अच्छा रहेगा।
- ई-टिकिट के स्थान पर रेलवे स्टेशन पर स्थित आरक्षण खिड़की से टिकिट करवाना तकनीकी रूप से उपयोगी है।
- प्रतिभागियों द्वारा रेल व सड़क से की जाने वाली यात्रा भी 'सरहद को प्रणाम' कार्यक्रम का हिस्सा है। प्रतिभागियों का अपने सहयात्रियों व से व्यवहार व्यक्ति व संस्था के प्रति समाज में धारणा खड़ी करता है।
- यात्रा में आवश्यक खाद्य सामग्री व पेय जल साथ रखें।
- आधार शिविर से वापस घर तक का आरक्षण जिले से प्रस्थान पूर्व करवा लेने से हम असुविधा व अव्यवस्था से बच सकते हैं।

चरण — 3



सीमा से संवाद

आधार शिविर से चौकी होते हुए सीमा क्षेत्र व वापस आधार शिविर तक की यात्रा में प्रतिभागी द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ इस कार्य के अंतर्गत आती हैं। पूर्व में दिखाई गई स्लाइड्स में उसका वैचारिक स्वरूप दिया गया था। उसका क्रियान्वयन करते समय सभी प्रकार की सावधानियाँ प्रतिपल ध्यान में रखते हुए सरहद का स्वास्थ्य, सुरक्षा प्रबंधन, समाज रचना, सोच व सांस्कृतिक धरोहर, और सुदूर फैले नैसर्गिक स्वरूप की सूक्ष्म व विराट अनुभूति कर उसका लेखन व छायाचित्रों में उन्हें संजोने का कार्य सफलतापूर्वक करना ही 'सीमा से संवाद' है।

चरण — 4



सरहद का संदेश

सीमा क्षेत्र में सीमा से संवाद कर वापस अपने जिले में वहाँ से लाये गये अनुभव, आकलन, आंकड़ों व छायाचित्रों के माध्यम से व्यक्त विचार का नाम है 'सरहद का संदेश'।
उसके कुछ प्रमुख बिंदु:

- अपने नगर, ग्राम, मोहल्ले, बस्तियों व शिक्षा संस्थानों में किये जाने वाले कार्यक्रमों की रचना अक्टूबर/नवंबर में प्रस्थान से पूर्व ही बनाना अच्छा रहेगा।
- प्रत्येक कार्यक्रम हेतु स्थान व व्यक्ति निर्धारित करना।
- PPT, आंकड़ों, छायाचित्रों व सरहद के लोकगीतों के माध्यम से सरहद का संदेश ज्यादा प्रभावी ढंग से संप्रेषित हो सकता है।
- लंबे व उबाऊ भाषण 'सरहद का संदेश' कार्यक्रम के प्रति उदासीनता का भाव पैदा कर सकते हैं। अतः आवश्यक सावधानी रखना अच्छा रहेगा।

सरहद को प्रणाम



Neighbouring Countries

Bangladesh:

4,096.70 km

Tibet: (Occupied by China)

3,488 km

Pakistan:

3,323 km

Afghanistan : (including PoI)

106 km

Nepal:

1,751 km

Myanmar:

1,643 km

Bhutan:

699 km

Total Land Borders

15,106.70 km

Total Sea Borders

7516.6 km (including all islands)

Total Border

22,623.30 km



Note: Map not up to Scale

सीमा से संवाद कार्यक्रम (तिथि क्रं.-1)



- कार्यक्रम 19, 20, 21, 22, 23 नवंबर 2012 ।
- 'घर से वापस घर' आने-जाने का समय इसके अतिरिक्त रहेगा ।
- 19 नवंबर 2012 सायं तक पहुँचना अच्छा रहेगा। 19 तारीख प्रातः से आधार शिविर पर पहुँचने वाले प्रतिभागियों के आवास व भोजन की व्यवस्था रहेगी।
- 20 नवंबर 2012 को प्रातः 11 बजे आवश्यक प्रशिक्षण हेतु आधार शिविर पर कार्यशाला होगी।
- 20 नवंबर 2012 सायं तक सभी दल आधार शिविर से चौकी तक की यात्रा करेंगे।
- 21 नवंबर 2012 को प्रातः सीमा क्षेत्र के आरंभ बिंदु से यात्रा प्रारंभ होगी।
- शाम से पहले दल के सदस्य रात्रि विश्राम हेतु वापस चौकी पर लौट आएँगे।

सीमा से संवाद कार्यक्रम (तिथि क्रं.-2)



- 22 नवंबर 2012 को प्रातः प्रतिभागी सीमा से संवाद हेतु फिर से सीमा क्षेत्र में पहुँचेंगे।
- पूर्व दिवस अनुसार शेष यात्रा पूर्ण कर शाम को चौकी या आधार शिविर पर लौट आएँगे।
- 22 नवंबर 2012 शाम सभी प्रतिभागी स्वयं के अनुभव लिखने, बाँटने व सँजोने का कार्य करेंगे।
- 23 नवंबर 2012 प्रातः 9 से 12 (स्थानीय सुविधानुसार) अनुभव संग्रह की बैठक होगी।
- 23 नवंबर 2012 दोपहर, भोजन पश्चात् सभी अपने गंतव्य स्थान हेतु प्रस्थान कर सकेंगे।
- 24 नवंबर 2012 के पहले दल का कोई भी प्रतिभागी, यात्रा संबंधी किसी भी सूचना अथवा कार्यक्रम का प्रसारण संचार माध्यमों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नहीं करेगा।

व्यवस्था-1



- 18 से 35 वर्ष आयु के युवक ही इसमें भाग ले सकेंगे।
- एक जिले से (अपने कार्य हेतु बनाया गया क्षेत्र) अधिकतम 10 युवक रहेंगे।
- जिले के युवकों का चयन विभाग करेगा।
- प्रतिभागी स्वस्थ हो। प्रतिदिन न्यूनतम 10 कि.मी. कठिन व मार्गविहीन क्षेत्र में पैदल चलने में सक्षम हो।
- उसे समाज व देश की ठीक समझ हो।
- दूरस्थ प्रांत व जिलों के युवकों को संपूर्ण यात्रा में औसतन 10 से 12 दिन का समय लग सकता है।
- आधार शिविर से सीमा क्षेत्र एवं वापस आधार शिविर आने-जाने का समय औसतन 3 दिन व 2 रात रहेगा, जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार थोड़ा घट-बढ़ भी सकता है।

व्यवस्था-2



- टोली तिरंगे ध्वज को लेकर सीमा क्षेत्र में यात्रा करेगी।
- प्रतिभागी दोनों दिन मार्ग में चलते हुए सीमा, वहाँ के नागरिकों, सैनिकों, पेड़ों व पहाड़ियों को प्रतीक के रूप में रक्षा सूत्र बाँधेंगे।
- सायंकाल सामूहिक वंदे मातरम् के साथ यात्रा पूर्ण कर सभी प्रतिभागी चौकी पर लौट आएँगे।
- स्थानीय परिस्थिति, मौसम व सुरक्षा कारणों से आधार शिविर से सीमा क्षेत्र व वापस आधार शिविर तक की यात्रा में सभी प्रकार के आवश्यक परिवर्तन करने का अधिकार आधार शिविर प्रमुख/चौकी प्रमुख को होगा, वह सभी को मान्य होगा।
- स्वास्थ्य खराब होने या अनुशासनहीनता की घटना अनुभव होने पर टोली प्रमुख, चौकी प्रमुख या आधार शिविर प्रमुख एक या एक से अधिक प्रतिभागी को यात्रा से वापस भेज सकते हैं।
- प्रत्येक सूचना पालन करने को दी गई आज्ञा ही है।

व्यवस्था-3



- सभी जिलों का प्रतिनिधित्व हो।
- प्रत्येक प्रतिभागी अनिवार्य, आवश्यक निजी उपयोग में आनेवाली सभी वस्तुएँ साथ लाये। रात्रि विश्राम हेतु स्लीपिंग बैग/कंबल (न्यूनतम 2) साथ रखना आवश्यक है। दुर्गम क्षेत्रों में सर्वत्र ज्यादा संख्या में बिस्तर आदि उपलब्ध करवाना (पहुँचाना) संभव नहीं होता है। अतः सभी प्रतिभागी अधिकतम स्वावलंबी रहने का प्रयत्न करें।
- अपने कैमरे व कंप्यूटर की कॉर्ड साथ लाये।
- गृह जिले से टोली के सभी सदस्य अपने जिला प्रमुख के नेतृत्व में आधार शिविर तक की यात्रा करेंगे।
- विभिन्न प्रांतों के प्रतिभागियों का एक दूसरे से परिचय हो, इस उद्देश्य से आधार शिविर पर विभिन्न टोलियों को मिलाकर नए समूह बनेंगे।
- 'सीमा से संवाद' में प्राप्त अनुभवों व निष्कर्षों की अभिव्यक्ति सभी प्रतिभागी स्वयं के गाँव या नगर में लौटकर, घर, मोहल्ले, बस्ती व महाविद्यालय में करें, यह अपेक्षा है।

पथ्य-1



- दिन भर की यात्रा में दिए गए चार नारों के अतिरिक्त किसी भी नारे अथवा जयघोष की अनुमति नहीं रहेगी:

भारत माता की जय

वंदे मातरम्

जय हिंद

हिंदुस्तान जिंदाबाद

देश रक्षा धर्म हमारा, देश सेवा कर्म हमारा

- यात्रा मार्ग में प्रशिक्षण के समय बताए गए निर्धारित गीत ही गाए जाएँगे।
- परिचय देते समय प्रांत का नाम बताएँ।
- बातचीत में दलगत राजनीति की चर्चा नहीं करना। हमार दल अध्ययन व अनुभव के लिये सरहद पर आया है।
- तीर्थ (जल) शुद्ध बोतल में 500-100 मिलि लीटर एकत्रित कर उसे सील बंद कर उस पर तीर्थ संग्रह स्थान का नाम व तिथि लिखें। यात्रा के समय तीर्थ की शुचिता बनाएँ रखें।
- चयनकर्ता व प्रमुख कार्यकर्ता यह सुनिश्चित करें कि शीघ्र क्रोधित होने वाले, बड़बोले, सूचना पालन करने में कमजोर या व्यवस्था में रहने में असमर्थ प्रतिभागियों का चयन न करें।

पथ्य-2



- सीमा क्षेत्र में रहनेवाले विभिन्न मत व संप्रदाय के लोगों से बिलकुल वाद-विवाद नहीं करना। उनके द्वारा बोली गई बातों को ठीक करने या उन्हें समझाने की भी कोशिश नहीं करना। व्यंग्य, ताने, उलहाने, निरर्थक उत्तेजना व अनावश्यक घटनाओं को जन्म देते हैं। आधार शिविर से वापस आधार शिविर लौट आने तक आपस में बातचीत करते समय, विश्राम अथवा भोजन करते समय भी संवेदनशील विषयों की आपस में चर्चा नहीं करनी है।
- सभी प्रतिभागी सीमा देखने, समझने व उससे संवाद करने आए हैं। अतः टोली के वातावरण में सीखने व जानने का भाव बनाए रखने का सभी प्रयत्न करेंगे।
- प्रतिभागी 23 नवंबर के पहले किसी भी प्रकार के अन्य भ्रमण या देशाटन का कार्यक्रम नहीं बनाएँगे। 'सरहद को प्रणाम' कार्यक्रम के पश्चात् ही सभी प्रकार के निजी कार्यक्रमों की रचना की जा सकेगी।

सूचनाएँ-1



- सीमा असमतल, बीहड़ व पहाड़ियों से युक्त होती है। वहाँ तापमान भी अत्यंत ठंडा, गरम व तेज हवाओं वाला हो सकता है। अतः प्रतिभागी का मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होना अनिवार्य है।
- प्रतिभागी विपरीत परिस्थितियों को सहने व समझने की क्षमता रखता हो।
- सभी प्रतिभागी शासन द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करेंगे।
- प्रस्थान पूर्व चिकित्सकीय जाँच व स्वीकृति-पत्र भरना अनिवार्य है।
- गृह स्थान से आधार शिविर तक आने-जाने का प्रवास-व्यय प्रतिभागी वहन करेगा।
- आधार शिविर से चौकी, फिर सीमा क्षेत्र व वापस आधार शिविर तक की यात्रा हेतु वाहन, आवास तथा भोजन की व्यवस्था सीमावर्ती जिले के कार्यकर्ता करेंगे।
- आधार शिविर से आगे की यात्रा में सामान्य (भोजन, आवास व यातायात) से अतिरिक्त किसी भी प्रकार के व्यय की व्यवस्था प्रतिभागी स्वयं करेगा।
- शासन द्वारा मान्य अथवा दिया गया फोटो युक्त पहचान पत्र जैसे मतदाता पहचान पत्र, ड्रायविंग लाइसेंस, UID आधार अवश्य साथ लाएँ। पासपोर्ट आकार के 3 फोटो अलग से साथ में रखें।

सूचनाएँ-2



- आधार शिविर पर निम्न वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त होंगी: प्रत्येक टोली को एक राष्ट्रीय ध्वज, ध्वजदंड व रक्षा सूत्र, प्रत्येक सदस्य को एक टोपी, सरहद की माटी रखने हेतु छोटी थैली।
- सभी सूचनाएँ जो समय-समय पर लिखित अथवा मौखिक रूप से दी जाएँगी वे यथावत् पालन हेतु हैं — ऐच्छिक नहीं।
- विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण को प्राप्त किए बगैर कोई भी प्रतिभागी कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकेगा।
- टोली का एक सदस्य तिरंगा लेकर चलेगा, शेष सदस्य समूह में साथ चलेंगे।
- यात्रा में नोटबुक, डायरी, पैन, कैमरा इत्यादि रख सकते हैं। सभी अपने अनुभवों को रोज लिखें, इसका विशेष आग्रह है।
- प्रतिबंधित क्षेत्रों में कैमरे का प्रयोग नहीं करना है।
- टोली के सदस्यों को अपने आधार शिविर की जानकारी होने पर, यात्रा की पूर्व तैयारी के रूप में, उससे संबंधित जिले की सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक व प्रकृति संबंधित जानकारी भारत सरकार के प्रकाशनों, गूगल व विकिमैपिया जैसे माध्यमों का प्रयोग कर संगृहीत करना अच्छा रहेगा।

धन्यवाद

हम हैं देशके भुवा